P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-VIII April-2015
E: ISSN NO.: 2349-980X

मंजूषा कला

सारांश

लोककलाएँ हमारी लोक संस्कृति की सहज प्रहरि है। इन कलाओं के माध्यम से हमारी संस्कृति के कई तत्व और रूप अभिव्यक्त हुए देखने को मिलते हैं। बिहार की लोक कला (मंजूषा कला) में बिहार की संस्कृति झलकती है। इसकी उत्पत्ति बिहुला विषहरी लोक कथा तथा उसी की परिणती विषहरी पूजा के कर्मकाण्ड से जुड़ी है। इस शैली में सरलता है। इसकी मानव आकृतियाँ बंगाल के लोकचित्रों से प्रभावित लगती है। अलंकरण में प्राकृतिक और ज्यामितीय आकृतियों का समावे"ा है। अति नाटकीयता इन चित्रों की वि"ोषता है। रंगों में गुलाबी और हरे रंगों का सीधा प्रयोग है। गति"ाील लहरियादार रेखाएँ चित्रों में आकर्षण पैदा करती हैं।

मुख्य शब्द : महाजनपद, षोड"ा, अषाढ़ माह, सतिबिहला, अधिष्ठात्री, विषहरी, च"म, झाँपी, कर्मकाण्ड।

राखी कुमारी
सहायक प्राध्यापिका,
छापा कला विभाग,
कला एवं ि"ाल्प महाविद्यालय,
पटना वि"वविद्यालय, पटना

प्रस्तावना

बिहार का अतीत प्राचीन काल से ही बहुत ही समृद्ध एवं गौरव"ाली रहा है। महात्मा बुद्ध के जीवनकाल में उत्तर भारत में सोलह महाजन पद थे। उसमें अंग भी एक था। अंग क्षेत्र हमें"ाा से ही कला–संस्कृति का महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है। महाभारत काल में दे"ा के वि"िाष्ट–ि"ाल्पी यहाँ आकर अपने कला–कौ"ाल का प्रद"ान करते थे। दानवीर कर्ण की यह भूमि युद्ध कला के साथ सूर्योपासना के लिए भी प्रसिद्ध थी। अंग–क्षेत्र भारतवर्ष के षोड"ा महाजन पदों में सबसे समृद्ध"ाली था। यहाँ की बणिक संस्कृति भारत की शीर्ष संस्कृतियों में से एक थी। यहाँ का प्रमुख नगर चम्पानगरी था जो नाग (सर्प) प्रधान क्षेत्र था। डॉ0 किरण सहाय ने अपनी पुस्तक ''विक्रम"िाला – इतिहास एवं पुरातत्व में'' देवी मनसा की मूर्त्ति का विवरण किया है। यह मूर्त्ति आठवीं/नवीं शताब्दी की है, ऐसा अनुमान लगाया जाता है। इसका वर्णन इस प्रकार है। ''देवी मनसा कमलासीन, दाहिनी भुजा में सर्प फर्णक'' है।

चम्पानगर गंगा नदी के तट पर बसा था और यहीं से व्यापार होता था। इससे पूर्व यह नगर मालिनी लोम्पादुपू, कर्णपू के नाम से भी जाना जाता था। आज यह भागलपुर जिले के रूप में प्रचलित है। मंजूषा कला का विस्तार आज केवल भागलपुर में बताया जाता है जबकि इसका वास्तविक विस्तार पूर्णिया से लेकर भागलपुर है। मंजूषा कला के साथ एक लोककथा जुड़ी है, जिसे ''बिहुला विषहरी'' की कथा कहते हैं। इस कथा में तत्कालीन समाज व्यवस्था, धार्मिक आस्था, नारी शक्ति का प्रद"ान है।

अषाढ़ माह के वर्षा उपरान्त सर्पों का भय लोगों में बढ़ जाता है इसी सर्प भय से मुक्ति हेतु विषहरी (देवी मनसा) की पूजा कर महिलाएँ सतिबिहुला से अखण्ड सौभाग्य"ाली होने की कामना करती हैं।

देवी मनसा के पूजन की परम्परा प्राचीन है, जिसका उल्लेख देवी भागवत में भी है। पूर्व काल से देवी, देवताओं के पूजा का विधान चला आ रहा है। ि"ाव परिवार में पार्वती, गणे"ा, कार्त्तिकेय, भैरव, नंदी आदि की पूजा होती थी। परन्तु नाग पूजा का उचित सम्मान नहीं मिला। इन्हीं नागों की अधिष्ठात्री देवी विषहरी मनसा का स्वरूप है। जिसकी बहनों में मैना, आदिति, जया और पद्मा हैं। इन बहनों की उत्पत्ति भगवान ि"ाव की जटा से हुई। भगवान ि"ाव के मन से उत्पन्न होने के कारण इन्हें 'मनसा' कहा जाने लगा। यही मनसा चारों बहनों का संयुक्त सम्बोधन है। अपने भक्तों को विष से त्राण दिलाने के कारण ही इनका नाम 'विषहरी' भी पड़ गया। अपनी पूजा नहीं होने से असंतुष्ट हो वह ि"ावजी के पास गई। ि"ावजी व्यवसायी चन्द्रधर (चन्दो सौदागर) मेरा परम भक्त है तुम उसके पास जाओ और पूजा की याचना करो। परन्तु ि"ाव उपासक चन्दो पूजा करने से इनकार करते हैं, इससे विषहरी नाराज होकर चन्दो सौदागर के पुत्र बालालखिन्दर को डस लेती हैं। मृत्यु के बाद बिहुला अपनी सुहाग वापस लेने के लिए मंजूषा के साथ नौका बनवाया, उस पर मृतक पति के साथ स्वयं

सुहाग की गुहार के लिए चल पड़ी। इस मंजूषा को पोत मंजूषा भी कहते हैं। इस मंजूषा का निर्माण लसुना माली से करवाया गया था।

मंजूषा कला का जन्म मानव की सहज प्रवृत्तियों से भी जुड़ा है। संसार भर की मानव जातियों की सहज प्रवृत्तियाँ एक सामान है। मंजूषा कला भी इसी सहज प्रवृत्तियों से जुड़ा है। श्रावण एवं भाद्रपद के सिंह नक्षत्र में परम्परागत रूप में गीत गायन–वादन करके पूजा अर्चना की जाती है। प्रचंड गर्मी के कारण अंग क्षेत्र में नगा/सर्प का निकलना प्रायः बढ़ जाता है। इन्हीं की पूजा की परंपरा के उद्दे"य से देवी विषहरी मनसा की पूजा क्षेत्रीय नागरिकों द्वारा धूम–धाम से होती है। विषहरी मनसा के चित्रों को बाँस, कागज से निर्मित मंजूषा पर पानी के रंगों से चित्रांकन होता है, इस मंजूषा को सजाने के लिए रंगीन सफेद कागज, सन की लकड़ी, शोला, गोटा आदि से अलकृत किया जाता है।

मंजूषा कला में प्रयोग होने वाली मानव आकृतियों के चेहरे एक च"म और आँख चेहरे से बाहर निकली चित्रित की जाती है। आकृतियों के कपाल सीधा, नाक तीखी, छोटे ओठ और परवल के समान आँखें अंकित की जाती है। स्त्रियों के आकृतियों में चोटी का चित्रण, देवी को आकृति में खुले लम्बे बाल चित्रित किये जाते हैं। बाल रेखा से नहीं रंगों से बनाये जाते हैं। उराजो के स्थान पर दो गोलाकार आकृतियाँ, पतली कमर होते हैं। पुरूष आकृतियों की मूँछें लम्बी घुमावदार तथा हाथ में दंड चित्रित किया जाता है। मंजूषा पर अंकित अन्य आकृतियों में चाँद, सूरज, मछली, चंदन, बाँस, बगीचा के साथ–साथ सर्प, नेवला, धोबिन भी बनायी जाती है। विषहरी की चार बहनों को सर्प रूप में एक साथ चित्रित किया जाता है। आकृतियाँ स्थिर होती हैं। चित्र में कान नहीं होते हैं। पुरूष आकृतियों से अधिक महिलाओं के वस्त्रों में अलंकरण किया जाता है। मंजूषा कला में अलंकृत बॉर्डर बनाया जाता है। बिहुला विषहरी की पूरी कथा जल रंगों से चित्रित की जाती हैं। इन चित्रों में गुलाबी, पीला, हरा और काला रंग ही प्रयोग किया जाता है। सर्प विष को दिखाने के लिए मानव आकृति के बीच काली रेखा अंकित की जाती है। यह सम्पूर्ण कलाकृति एक अद्भूत प्रभाव पैदा करती है।

वीर–मंजूषा (झाँपी) मिट्टी के कल"ा के आकार की होती है। कल"ा के चारों ओर सुन्दर आकृतियों का चित्रण होता है तथा कल"ा के ऊपर ढक्कन का रूप सर्प फन के तरह बनाया जाता है। इस वीर मंजूषा के ऊपर आम के पल्लवों का सजाकर स्त्रियाँ जल में प्रवाहित करती हैं। अब मंजूषा के पात्र अनेक धातुओं के भी बनने लगे हैं।

लोककलाएँ हमारी लोकसंस्कृति की सहज प्रहरी है। इन कलाओं के माध्यम से हमारी संस्कृति के कई तत्व और रूप अभिव्यक्त हुए देखने को मिलते हैं। इन लोक कलाओं में चित्रकलाओं का महत्व सर्वाधिक सम्प्रेषण लिए होता है। बिहार के मंजूषा लोककला में भी बिहार की संस्कृति झलकती है। इसकी उत्पत्ति बिहुला विषहरी लोक कथा तथा उसी की परिणति विषहरी पूजा के कर्म काण्ड से जुड़ी है। ये कलाकृति विषहरी पूजा के अवसर पर व्यापक रूप से बनाई जाती है। इसमें बने चित्रों में बिहुला द्वारा पति के प्राण रक्षा में किये गये प्रयासों को चित्रित किया जाता है। यह शैली नारी शक्ति के उस भाव को व्यक्त करती है, जिसमें नारी शक्ति के रूप में पूजनीय है। बिहुला अपने पति के मृत्यु से लड़कर, उसे सौभाग्य में बदलती है। मृत्यु से संघर्ष कर जीवन का जयघोष करने वाली यह नारी थी। नारी शक्ति का यह दुर्लभ फलक है। मंजूषा कला मृत्यु के अंधकार से जीवन के उजाले की ओर की कथा है। दुःख पर सुख की विजय गाथा है, बिहुला को सतो की पद्वी मिली पर यह पति के साथ चिता पर जलने पर नहीं अपितु मृत्यु पर फतह के कारण। नारी स"ाक्तिकरण के आन्दोलन का यह पत्र इसी वजह से इस जनपद का इतिहास अध्याय बन चुका है।

सन्दर्भ

1. बिहार इतिहास एवं संस्कृति ''प्रमोदानंद दास, कुमार अमरेन्द्र'' लुसेन्ट पब्लिके"ान, पृष्ठ सं0–7.
2. बिहार की कला और ि"ाल्प ''"याम शर्मा'' प्रका"ाक ि"ाक्षा विभाग, बिहार, पटना, पृष्ठ सं0–45, 46.
3. बिहार की समकालीनकला ''विनय कुमार'' प्रका"ाक सांस्कृतिक निदे"ालय, कला संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार, पृष्ठ सं0–11.
4. आदिवासी कला ''वीरबाला भावसार'' प्रका"ान विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ सं0–9.
5. पारम्परिक लोक कला प्र"िाक्षण सह प्रद"र्ानी 2007, पृष्ठ सं0–3.
6. साँझी कला ''डॉ0 कहानी भानावत'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृष्ठ सं0–83.
7. मंजूषा चित्रकला अंग प्रदे"ा की धरोहर ''मनोज कुमार'' प्रका"ाक : दि"ाा ग्रामीण विकास मंच, बैजानी, भागलपुर, पृष्ठ सं0–5.
8. चित्र परम्परा और बिहार ''"याम शर्मा'' मुद्रक एवं प्रका"ाक वातायन मीडिया एण्ड पब्लिके"ान प्रा0 लि0, पृष्ठ सं0–108–109.